शोध - ऋतु Shodh-Rityu

तिमाही शोध-पत्रिका

PEER Reviewed & Refereed JOURNAL

ISSUE-22 **VOLUME- 2** IMPACT FACTOR-**SJIF-6.424,** GIF-**2**.3588,

ISSN-2454-6283 अक्तूबर-दिसंबर, 2020

AN INTERNATIONAL MULTI-DISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL

सम्पादक

डॉ.सुनील जाधव ,नांदेड

९४०५३८४६७२

तकनीकि सम्पादक

अनिल जाधव,

मुंबई

पत्राचार हेतु पता->

महाराणा प्रताप हाउसिंग सोसाइटी,हनुमान गढ़ कमान के सामने,नांदेड-४३१६०

Head of the Dept.
ACS College, Shankarnagar
Tq. Biloli Dist. Nanded.

ISSUE-22 VOL-2 IMPACT- SJIF-6.424, GIF-2.3588 ISSN-2454-6283 अक्तूबर-दिसम्बर,2020

अ नु क्र म णि का

1. हिन्दी साहित्य : स्त्री–डॉ.रश्मि मालगी–05
2. समकालीन कहानियों में संवेदना का बदलता स्वरूप–डॉ.आशुतोष सिंह भदौरिया–09
3. दसवें दशक के उपन्यासों में चिर्तित आर्थिक मूल्य–डॉ. संतोष रामचंद्र आडे–13
4. 'छूट गया पड़ाव' उपन्यास में नारी का संघर्ष और अंतर्द्वन्द्व–प्रा.डॉ.ज्ञानेश्वर गंगाधर गाडे–16
5. दलित चेतना के संवाहक 'मुंशी प्रेमचन्द्र–डॉ.उदारता–18
6. आनलाईन शिक्षण अधिगम प्रक्रिया'अनुभव समस्याएं एवं सुझावों का अध्ययन'–डॉ.आशीष कुमार गुप्ता–21
7. The Key Factors Of N.R.H.M.-Dr. Shailesh Kumar-23
8. कलाकार सतीश चन्द्रा का सृजनात्मक दृष्टिकोण एवं कला क्षेत्र में प्रयुक्त तकनीक–शिवानी अग्रवाल–27
9. लोकसाहित्यः कल और आज–प्रा.डॉ.हणमंत पवार–29
10. दलित संघर्ष का प्रतीक 'मोहनदास'–विष्णु प्रसाद नायक–31
11. Physiochemical and microbial properties of river of water in Prayagraj-Meenakshi Gupta-34
12. कृषि उत्पादन एवं विपणन–डॉ.राजेश कुमार चौरसिया–36
13. महिलाओं के खिलाफ बढ़ती हिंसा–शिवानी अवस्थी–39
14. हिंदी के काव्य ग्रंथो में वानस्पतिक पर्यावरण एक विवेचन–डॉ.डमरे मोहन मुंजाभाऊ–42
15. पुस्तक समीक्षा–लोकतांत्रिक विकेन्द्रीकरण एवं जनजातीय नेतृत्व–डॉ.आशीष कुमार गुप्ता–45
16. स्त्री जीवन की त्रासदी–तट की खोज–बिपन कुमार महतो–47
17. सर्वहारा के लिए बैचेन–बाबा नागार्जुन–डॉ.विजयता पंडित–49
18. सुधा अरोड़ा की कहानियों में नारी जीवन का संघर्ष–अनिता कुमारी–50
19. प्रेमचंद का साहित्य और सामाजिक सरोकार–डॉ.कंचन गुप्ता–52
20. नई कविता की चुनिंदा कविताओं में काव्यगत प्रवृत्तियाँ–प्रा.डॉ. भुमरे पी.एम–55
21. माता अहिल्या की उद्धार की कथा का ओलंकिक अध्ययन–डॉ.अजय कुमार उपाध्याय, डॉ.नवीन अग्रवाल–57
22. कामायनी महाकाव्य में अभिव्यक्त सामाजिक समरसता–वचनाराम काबावत–59
23. राष्ट्र–निर्माण में महिलाओं की भूमिका–राजेन्द्र कौर महाजन–63
24. Some Medicinal Plants Found In Assam, India-Priyanka Saikia–66
25. A Comparative Study Of Anxiety Of Senior And ... Weight Lifters-Dr. Susheel Shukla
26. समकालीन हिंदी कहानियो में कामकाजी महिला एवं उनका जीवन संघर्ष–डॉ.डमरे मोहन मुंजाभाऊ–70
27. अनुसंधान और आलोचना में सामने और वैषम्य–डॉ. रमेश संभाजी कुरे–73
28. मन्नू भंडारी की कहानियों में नारी विमर्श–उर्मिला टोप्पो–76
29. अभिमन्यु अनत के उपन्यासों में जीवन मूल्य–जयन्ती–78
30. किन्नरों के जीवन का यथार्थ चित्रण ('तीसरी ताली' उपन्यास के विशेष संदर्भ में)–प्रोफेसर बेवले ए.जे.–81

Head of the Dept.
ACS College, Shankarnagar
Tq. Biloli Dist. Nanded.

20.नई कविता की चुनिंदा कविताओं में काव्यगत प्रवृत्तियाँ

(विशेषः अज्ञेय, रघुवीर सहाय, धूमिल,मणिमधुकर)

प्रा.डॉ. भुमरे पी.एम.,सा.प्राध्यापक (हिंदी विभाग)
कला,वाणिज्य व विज्ञान महाविद्यालय, शंकरनगर ता.बिलोली जि. नांदेड.

नई कविता भारतीय स्वतंत्रता के बाद लिखी गयी उन कविताओं को कहा गया, जिनमें परंपरागत कविता से आगे नये भावबोधों की अभिव्यक्ति के साथ ही नए मूल्यों और नए शिल्प–विधानों का अन्वेषण किया गया। यह अन्वेषण साहित्य में कोई नई वस्तु नहीं है। ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में देखें तो प्रायः सभी नए वाद या नई–नई धाराऐं अपने पूर्ववर्ती वादों या धाराओं की तुलना में कुछ नवीन अन्वेषण की प्यास लिये दिखायी पडती है, साहित्य की यह नवीनता सदेव बाध्य है, यदि वह अपना संबंध बदलते हुए सामाजिक जीवन के मूल सत्यों से बनाये रखे। प्रयोगवाद और नई कविता की प्रवृत्तियों में कोई विशेष अंतर नहीं दिखाई देता, नई कविता प्रयोगवाद की नींव पर ही खडी है, फिर भी कथ्य की व्यापकता और दृष्टी की उन्मुक्ता ईमानदार अनुभूति का आग्रह सामाजिक एवं व्यक्ति पक्ष का रोमांटिक भावबोध से हटकर नवीन आधुनिकता से संपन्न भाव–बोध एक नए शिल्प को गढता है। वादमुक्त काव्य स्वाधीन चिंतन की व्यापक स्तर पर प्रतिष्टाक्षण की अनुभूतियों का चित्रण काव्य मुक्ति गद्य का काव्यात्मक उपयाग नए सौंदर्यबोध की अभिव्यक्ति अनुभूतियों में घनत्व और तीव्रता, राजनीतिक स्थितियों पर व्यंग एक प्रतीकां–बिम्बों–मिथकों के माध्यम से तथा आदर्शवाद से हटकर नए मनुष्य की नई मानववादी वैचारिक भूमि की प्रतिष्ठा नई कविता की विशेषताऐं रही है।

नई कविता की काव्यगत प्रवृत्तियाँ :–

1)सामाजिक यथार्थ के प्रति जागरूक–शब्द संस्कार के प्रति सजग रहते हुए मानसिक जटिलताओं की काव्यमयी सृष्टी"नई कविता"है। नई कविता एक नई मनःस्थिति का एक प्रतिबिम्ब है। मानव जाति और सृष्टि मात्र के संबंधो के परिपार्ख में मानव और मानवजातिका नया संबंध नई कविता की मूल विशिष्टता है। नई कविता में मानव का दो रुपों में चित्रण किया गया है। एक रुप में मानव व्यक्ति पर आग्रह है, दुसरे रुप में मानव समष्टि पर आग्रह है। नया कवि क्षणवादी जीवन दर्शन का अंगीकार करता है। निम्नलिखित पंक्तियों का केन्द्रीय स्वर यही क्षणवादिता है..."आओ हम उस अतीत के भूलें/और आज की अपनी रग–रग के अंतर को छू लें/छू लें इसी क्षण/क्योंकि कल के वे नहीं रहे/क्योंकि कल हम भी नहीं रहेंगे" द्वितीय महायुध्द के बाद उत्पन्न भीषण परिस्थितियों के बीच आज का कवि उस व्यक्ति को चित्रित करता है जिसमें समाज की सारी प्रगतिशील–शक्तीयाँ केंद्रीभूत हो गई हों। नई कविता में पुरातन परंपराओं के प्रति कोई विशेष आस्था नहीं है। इस धारा का कवि उन्हें आज का संघर्षपूर्ण जीवन की अभिव्यक्ति के लिए अपर्याप्त समझता है। परिणामतः प्रस्तुत धारा में आज का सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, और राजनीतिक परंपराओं से व्याप्त मानवीय जीवन के प्रति उदासीनता, निराशा और अविश्वास की भावनाएँ अधिक उभरी हुई है।

नई कविता में आधुनिक युगबोध व आधुनिक सौंदर्य बोध की जोरों से दुहाई दी जाती हैं। प्राय आलोचकों ने दोष लगाया है कि, नई कविता में रस नहीं होता और उस में साधारणीकरण की मात्रा भी नही होती है किंतु यह आरोप सर्वांश रुप से सत्य नही है। "रघुवीर सहाय" की छोटी सी कविता "बात बोलेगी" मौलिकता, तीव्रता, गहरी संवेदना, भाव संवेदना स्वर तथा व्यापक प्रयोगशीलता का एक उत्तम उदाहरण है। "बात बोलेगी हम नहींभेद खोलेगी बात ही" नई कविता की भाषा सरल छोटे वाक्यों, सुबोध नया प्रचलित शब्दों यहाँ तक कि अंग्रेजी के शब्दों मुहावरों और कहावतों आदि सी परिपूर्णता होती है। आज का कवि अपने को समझाने के साथ भविष्य के प्रति आशापूर्ण है, व्यापक सत्य की व्यंजना करने की चेष्टा करता है। और सामाजिक यथार्थ के प्रति जागरुक भी है। नई कविता ने जीवन को उपयुक्त धाराओं की कविताओं की तरह न तो एकांगी रुप में देखा, न केवल महत्तम रुप में, बल्कि उसके जीवन को (वह चाहे किसी वर्ग का हो, चाहे व्यक्ति का हो चाहे समाज का हो नई कविता प्रयोगवाद की नींव पर ही खडी है। फिर भी कथ्य की व्यापकता और दृष्टी की उन्मुक्ता ईमानदार अनुभूति का आग्रह सामाजिक एवं व्यक्ति पक्ष का संक्षेप्त रोमांटिक भावबोध से हाटकर नवीन आधुनिकता से संपन्न भाव–बोध एक नए शिल्प को गढता है। वादमुक्त काव्य, स्वाधीन चिंतन की व्यापक सतह पर प्रतिष्ठा, क्षण की अनुभूतियों

Head of the Dept.
... College, Shankarnagar

का चित्रण काव्य मुक्ति, गद्य का काव्यात्मक उपयोग, नए सौंदर्यबोध की अभिव्यक्ति, अनुभूतियों में घनत्व और तीव्रता राजनीतिक स्थितियों पर व्यंग्य नए प्रतीकों–बिम्बों–मिथकों के माध्यम से तथा आदर्शवाद से हटकर नए मनुष्य की नई मानववादी वैचारिक भूमि की प्रतिष्ठा नई कविता की विशेषताएँ रहीं है।

2)आस्था और विश्वासः–नई कविता में निराशा अनास्था और अविश्वास के साथ–साथ आस्था और विश्वास के स्वर भी सुखद प्रतिपक्ष के रूप में सुनाई पडते हैं। आरंभ में इन कवियों में घोर निराशा दिखाई देती है, लेकिन बाद में यही कवि आशा और विश्वास से भरी कविताएँ लिखते हैं। यही आशावादी दृष्टिकोण आगे चलकर समकालीन प्रश्नों और समस्याओं से जूझता हुआ दिखाई देता है। आशा का बिंब आगे चलकर स्वास्थ्य का प्रतीक बन गया है।

3)महानगरीय और ग्रामीण मानवीय सभ्यता का यथार्थ चित्रणः–नयी कविता में महानगरीय शहरी तथा ग्रामीण जीवन संस्कारों के नवीन और यथार्थवादी चित्रण मिलते है। इस दौर में कविता के केंद्र गाँव और छोटे शहरों से शिफ्ट होकर महानगर बन रहे थे कई सभ्यताओं और संस्कारो के आपसी टकराव नई कविता में दर्ज हुए हैं। अज्ञेय ने शहरी जीवन की यथार्थ स्थिति अपनी साँप शीर्षक में उभारते हुए लिखा है। "साँप तुम सभ्य तो हुए नहीं , नगर में बसना भी तुम्हे नहीं आया। एक बात पूछो–(उत्तर दोगे ?) तब कैसे सीखा डसना–विष कहाँ से पाया?"यहाँ तीखा व्यंग्य भाव है जबकि धूमिल अपने गांव खेवली का मार्मिक चित्र प्रस्तुत करते हुए लिखते हैं। "वहाँ कोई सपना नहीं है। न भेडिये का डर। बच्चों को सुलाकर औरतें खेत पर चली गई हैं। खाये जाने लायक कुछ भी शेष नहीं है। वहाँ सब कुछ सदाचार की तरह स्पष्ट और ईमानदारी की तरह असफल हैं।" नई कविता में परिवेश, मनुष्यःजीवन और उसकी सभ्यता में आए बदलावों का यथार्थ अंकन हुआ है।

4)मानवतावाद की नई परिभाषा–नई कविता मानवतावादी है, पर इसका मानवतावाद मिथ्या आदर्श की परिकल्पनाओं पर आधारित नहीं है। उसकी यथार्थ सृष्टी मनुष्य को उसके पूरे परिवेश में समझने का बौध्दिक प्रयास करती है। उसकी उलझी हुई संवेदना चेतना के विभिन्न स्तरों तक अनुभूत परिवेश की व्याख्या करने की कोशिश करती है। नई कविता मनुष्य को किसी कल्पित सुंदरता और मूल्यों के आधार पर नहीं बल्कि उसके तडपते दर्दो और संवेदनाओं के आधार पर बडा सिध्द करती है। यही उसकी लोक संपृक्ति है। अज्ञेय की एक कविता–"अच्छा/खंडित सत्य/सुघर नीरन्ध्र मृषा से/अच्छा/पीडित प्यार/अकंपिवत निर्ममता से/अच्छी कुंठा रहित इकाई/सांचे ढले समाज से/अरी ओ करुणा प्रभामय"

5)यथार्थ की पीडा का चित्रण–नई कविता वास्तव में व्यक्ति की पीडा की कविता है। प्रयोगवादी कविता में जहाँ व्यक्ति के आंतरिक तनाव और द्वंद्वों को उकेरा गया है वहीं नई कविता में वह व्यापक सामाजिक यथार्थ से जुडता है। जिंदगी की मारक स्थितियों को, उसकी ठोस सच्चाइयों को और राजनीतिक सरोकारों को यह कविता भुलाती नहीं है पर यह न तो उत्तेजना बढाती है और न ही कवि भावुकता का शिकार होता है। अपने अनुभव के सत्य को कवि बाहर के संसार के सत्य से भी जोडता है। इससे नई कविता का काव्यानुभव पुरानी कविता के काव्यानुभव से अलग तरह का हो जाता है। जैसे–"एकाएक मुझे भान होता है जग का/अखबारी दुनिया का फैलाव/फंसाव घिराव, तनाव है सब ओर/पते न खडके/सेना ने घेर ली हैं"

6)भाषा–नई कविता भाषा के क्षेत्र में भी आधुनिक–बोध के साथ बढती है और नई होती है। नया कवि पुरानी भाषा में नई संवेदना को अभिव्यक्ति के लिए समर्थ नही पाता इसलिए वह भाषा के नए रुप को गढने के लिए तत्पर रहता है। जैसे–"शब्द अब भी चाहता हूँ/पर वह कि जो जाए वहाँ जहाँ होता हुआ/तुम तक पहुँचे/चीजों के आर–पार दो अर्थ मिलाकर सिर्फ एक स्वच्छंद अर्थ दे" नई कविता की इस नई भाषा में गद्यात्मकता के प्रति विशेष लगाव बन गया है। कहीं–कहीं तो कविता गद्य का प्रतिरुप लगती है। अलंकृत भाषा को नई कविता में बहिष्कृत किया गया है।सपाट शब्दों में अभिव्यक्ति से इसमें सपाटबयानी आ गई है तो कहीं खुरदरी हो गई है। कही–कहीं तो कविता सिर्फ ब्यौरा बन कर रह गई है। नई कविता के कुछ कवियों ने स्वयं को मौलिक और उत्साही साबित करने के लिए स्थापित मूल्यों को भी अस्वीकार करने में अभिधा शैली से अभिव्यक्ति का दंभ भरा है। अशोक वाजपेयी ने ऐसे कवियों की सतही मुद्रा फिरकेबाजी चालू मुहावरेदानी और पैगम्बराना अंदाज को समर्थ कविता के लिए घातक बताया है। उन्ही के शब्दों में–रचनात्मक स्तर पर भाषा के संस्कार के प्रति, उसकी सांस्कृतिक जडों के प्रति, उदासीनता आयी है और पारम्पारिक अनुगूंजों और आसंगों से कवियों के अजान और अरुचि के कारण, कट जाने से काव्य भाषा में ज्यादातर युवा कवियों की भाषा में सपाटता, सतहीपन और मानवीय दरिद्रता आयी है। इस संदर्भ में मणि मधुकर की कविता का एक अंश.... "श्रध्दा सम्मान और प्रेरणा जैसे शब्दों को/पान की पीक के साथ

थूकता हूँ मैं/मंत्रिकंडलों में बलात्कार करनेवाले लोगों पर/मेरे थूक का रंग लाल है,/काश, मेरे खुन का रंग भी लाल होता"

यद्यपि नई कविता का शब्द संसार बहुत व्यापक है। इसमें संस्कृत, हिंदी, उर्दु, तथा प्रांतीय भाषाओं और बोलियों के साथ–साथ अंग्रेजी के शब्दों का प्रयोग सामान्य हो गया है। कई जगह नए विशेषणों तथा क्रियापदो का निर्माण किया गया है, जेसे–रंगिम, चंदीले,लम्बायित,उकसती, बिलमान, हरयाबल आदि। विज्ञान, धर्म, दर्शन राजनीति, समाजशार्स्त आदि सभी क्षेत्रों से उसने शब्दों का चयन किया है। आम आदमी के स्वर, चिर–परिचित शब्द आज की कवता में देखे जा सकते है। जन भाषा में सूक्तियों लोकोक्तियों और मुहावरों का प्रयोग कभी व्यंग्य प्रदर्शन के लिए तो कभी आम आदमी का आक्रोश व्यक्त करने के लिए। लोकगीतों,लोकधुनों के आधार पर भी कविता की रचना की गई। फिर भी इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता कि, नई कविता ने भाषा को अपनी सुविधा के अनुरुप तोडा मरोडा है, यह भाषा के साथ खिलवाड है।

उपसंहार–

नई कविता जनता की और जनता के साथ की कविता है। वह परंपरा से विच्छेद होने के बावजूद परंपरा से मुक्त नहीं है। इस कविता आंदोलन से हिन्दी साहित्य मुक्तिबोध, भवानी प्रसाद मिश्र, शमशेर बहादुर सिंह, कीर्ति चौधरी , भारतभूषण अग्रवाल, सर्वेश्वर दयाल सक्सेना, केदारनाथ अग्रवाल, लक्ष्मीकांत वर्मा जगदीश गुप्त मुद्रा राक्षस नेमिचंद्र जैन प्रभाकर माचवे, राजकमल चौधरी, रघुवीर सहाय, श्रीकांत वर्मा, दुष्यन्त कुमार , धूमिल, कुंवर नारायण, कैलाष वाजपेयी, श्रीराम वर्मा, दुधनाथ सिंह, जैसे सशक्त महत्वपूर्ण कवि उभरकर आये। देवराज ने कहा है की इस कविता ने ही पहली बार व्यक्ति को व्यक्ति की परंपरा में रखकर देखने का प्रयास किया। भक्तिकाल से लेकर प्रगतिवाद तक व्यक्ति को मंदिर, महल, स्वर्ग, आकाश, और मार्क्स की तथाकथित मार्क्स वादियों द्वारा स्वयं की गई अस्वाभाविक व्याख्याओं के रंगीन फोटो में लपेटा जा रहा है। नयी कविता ने ही उसे आम जिन्दगी की अच्छाइयों और बुराइयों के बीच मनोवैज्ञानिक रुप में चित्रित किया है। अतः नई कविता ने व्यक्ति को परंपरा से काटा नहीं बल्कि जोडा है।

संदर्भ– **1)**राष्ट्रीय नवजागरण और हिंदी पत्रकारिता–डॉ.मीरा रानी **2)**हिंदी साहित्य परिवर्तन के सौ वर्ष–डॉ. ओंकारनाथ श्रीवास्तव **3)**कविता का आधुनिक परिप्रेक्ष्य–डॉ. मल्सेद्र शुक्ल **4)**नई कविता–कुमार

21.माता अहिल्या की उद्धार की कथा का ओलंकिक अध्ययन

डॉ.अजय कुमार उपाध्याय, डॉ.नवीन अग्रवाल

सहायक प्रोफेसर (वाणिज्य विभाग) किशोरी रमन पी जी कॉलेज मथुरा।

वैदिक काल से वर्तमान समय तक महिलाओं का स्थान भारतीय समाज में अतिगौरवनीय रहा है। पुरुषों के साथ नारी हमेशा मित्रवत कार्य करती है। नारी ग्रहणी,गृह स्वामिनी, सहधर्मणि आदि नामों से संबोधित होती है।जन्म से विवाह तक पिता के घर में कन्या के रूप मे, विवाह उपरांत पत्नी के रूप में और गृह स्वामिनी के रूप में शोभा प्राप्त होती है। परिवार में जहां नारियों का सम्मान होता है वहां सुख और प्रसन्नता बनी रहती है। वहां सदैव लक्ष्मी का निवास होता है। भारत के पुराणों में नारी का स्थान देवी तुल्य है। इन देवियों में अनुसुइया, देवहूति,उर्वशी, कौशल्या, सीता,मंदोदरी,कुंती,अहिल्या आदि का स्थान सर्वोपरि है।एक बार भगवान ब्रह्मा जी ने कुछ सुंदर बालिकाओं का सृजन किया था, जिनमें अहिल्या अति सुंदर थी उनकी सुंदरता पर सभी देव, ऋषि–मुनि आदि मोहित थे और उनसे विवाह करना चाहते थे।अतः ब्रह्मा जी ने इनके विवाह के लिए एक शर्त रखी और कहा कि जो भी पहले तीनों लोकों का भ्रमण करके लौटेगा उसी के साथ अहिल्या का विवाह होगा।सभी ऋषि मुनि और देवगढ़ अपनी अपनी शक्ति के अनुसार भ्रमण पर चले गए लेकिन महर्षि गौतम ने वहीं खड़ी कामधेनु के तीन चक्कर लगाए और ब्रह्मा जी से कहा हे परमपिता मैंने आपकी शर्त पूरी कर ली है। ब्रह्मा जी ने ऋषि गौतम के साथ अहिल्या का विवाह कर दिया लेकिन इंद्र अहिल्या की सुंदरता पर मोहित था और उसने अहिल्या के साथ कुकृत्य करने के दृष्टिकोण से चंद्र देव का को साथ ले लिया और एक दिन ऋषि के आश्रम में मध्यरात्रि में जा पहुंचा जैसे ही ऋषि गौतम स्नान के लिए गंगा तट पर गए वैसे ही भेष बदलकर इंद्र अहिल्याके पास जा पहुंचा और कुकृत्य कर जब वह जाने लगा तो ऋषि गौतम की दृष्टि पड़ गई और उन्होंने क्रोधवश अहिल्या को शाप दे दिया जिससे वह एक शिला के रूप में बदल गई।जब प्रभु राम ताड़का को मारकर महर्षि विश्वामित्र के साथ जनकपुरी जा रहे थे तो उनकी दृष्टि उस कुटिया पर पड़ी और

Head of the Dept.
ACS College Shankarnagar
Dist. Nanded.

विद्यापीठ प्रकाशन
(ओ.पी.सी.) प्रा.लि.
न्यु कलईवाला, शहाजी राजे मार्ग,
विलेपार्ले (पूर्व), मुंबई - 400057
दूरभाष: 9987478404/9869341047
ई-मेल: vidyapeethprakashan@gmail.com

प्रथम संस्करण : 2020
सर्वाधिकार : लेखकाधीन
ISBN : **978-93-89925-01-2**

मूल्य: ₹ 200/-

Hindi Aur Marathi Dalit Sahitya mein Abhivyaktya
Kranti Chetana

Edited By : Dr. Udhav Tukaram Bhandare

भारत में मुद्रित

विद्यापीठ प्रकाशन (ओ.पी.सी.) प्रा.लि.
न्यु कलईवाला, शहाजी राजे मार्ग, विलेपार्ले (पूर्व), मुंबई - 400057
दूरभाष: 9987478404/9869341047
ई-मेल: vidyapeethprakashan@gmail.com
क्रियेटिव पारस प्रिंटर्स, लोअर परेल, मुंबई

Head of the Dept.
ACS College, Shankarnagar
Tq. Biloli Dist. Nanded.

अंतर्राष्ट्रीय सलाहकार समिति

माननीय प्रोफेसर, डॉ. वसंत बऱ्हाटे
प्राचार्य
चांगु काना ठाकुर कला, वाणिज्य और विज्ञान महाविद्यालय(स्वायत्त), नवीन पनवेल

माननीय डॉ. जोगेन्द्रसिंह बिसेन
उप-कुलपति,
स्वामी रामानंद तीर्थ मराठवाडा विश्वविद्यालय, नांदेड

माननीय डॉ. जयप्रकाश कर्दम
प्रसिद्ध हिन्दी साहित्यकार
इन्दिरापुरी, गाजियाबाद, उत्तरप्रदेश

डॉ. शरणकुमार निंबाळे
प्रसिद्ध मराठी साहित्यकार, पुणे

प्राचार्य डॉ. जाधव रावसाहेब मोहनराव
अध्यक्ष
हिन्दी अध्ययन मंडल स्वा.रा.ती.म.वि. नांदेड

प्रोफेसर डॉ. रतनकुमार पाण्डेय
भूतपूर्व हिन्दी-विभाग प्रमुख
मुंबई विश्वविद्यालय, मुंबई

डॉ. अनिल सिंह
अधिष्ठाता, मानवविद्या संकाय,
मुंबई विश्वविद्यालय, मुंबई

डॉ. मनप्रीत कौर
अध्यक्ष, हिन्दी-विभाग
गुरुनानक महाविद्यालय, जी.टी.वी. नगर

डॉ. कुरे रमेश संभाजी
अध्यक्ष, हिन्दी विभाग
[illegible] महाविद्यालय, हिंगोली

माननीय प्रोफेसर डॉ. सुहास पेडनेकर
उप-कुलपति
मुंबई विश्वविद्यालय, मुंबई

माननीय डॉ. निलांती कुमारी राजपक्षा
श्री जयवर्धनेपुरा विश्वविद्यालय, श्रीलंका

माननीय डॉ.संजय जगत जगताप
संयुक्त निदेशक, उच्च शिक्षण
कोकण विभाग, महाराष्ट्र

डॉ. सूर्यनारायण रणसुभे
प्रसिद्ध हिन्दी साहित्यकार, लातूर

डॉ. अर्जुन जानू घरत
भूतपूर्व हिन्दी-विभाग प्रमुख
महात्मा फुले कला, विज्ञान और वाणिज्य महाविद्यालय, पनवेल

डॉ. अर्जुन चव्हाण
हिन्दी विभाग, कोल्हापुर विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

डॉ. परिहार सुजीतसिंग एस.
अध्यक्ष, हिन्दी-विभाग
डि.एस.एम.महाविद्यालय, हिंगोली

डॉ. हूबनाथ पाण्डेय
प्रोफेसर, हिन्दी-विभाग, मुंबई विश्वविद्यालय, मुंबई

डॉ. दिलीपकुमार कालीदास मेहरा
हिन्दी विभाग,
स.प. विश्वविद्यालय, वल्लभ विद्यानगर, गुजरात

Head of the Dept.
College, Shankarnagar

- ओमप्रकाश वाल्मीकि की आत्मकथा-'जूठन' में क्रांति चेतना ४८
  डॉ.रणजीत जाधव
- 'दोहरा अभिशाप' आत्मकथा में क्रांति चेतना ५०
  डॉ. मनिषा रा. घरत
- शरणकुमार निंबाळे की आत्मकथा 'अक्करमाशी' में अभिव्यक्त क्रांति चेतना ५१
  प्रांजल कुमार नाथ
- हिंदी दलित आत्मकथाओं में क्रांति चेतना ५२
  डॉ. संग्राम सोपानराव गायकवाड
- हिंदी दलित उपन्यासों में क्रांति चेतना ५३
  डॉ. जोगेंद्रसिंग मोतीसिंग बिसेन
- इक्कीसवीं सदी की हिन्दी दलित आत्मकथाओं में क्रांति चेतना ५४
  डॉ. अनिलकुमार सिंह
- सूरजपाल चौहान की आत्मकथा 'तिरस्कृत' में अभिव्यक्त दलित क्रांति चेतना ५५
  प्रा. भूषण घरत
- 'मोरी की ईंट' उपन्यास में दलितों का जीवन दर्शन ५६
  डॉ.पी.एम.भुमरे
- 'नटरंग' उपन्यास में चित्रित दलित कलाकार की त्रासदी ५७
  डॉ. अनिल काळे
- डॉ.बाबासाहब आंबेडकर : विचारधारा और हिन्दी उपन्यास ५८
  डॉ.काळे पुष्पलता विट्ठलराव
- गिरिराज किशोर के 'परिशिष्ट' उपन्यास में दलित क्रांति चेतना ५९
  दिपाली दत्तात्रय तांबे
- 'आज बाजार बंद है' कृति में अभिव्यक्त दलित क्रांति चेतना ६०
  सुनीता पाल
- प्रेमचन्द की दलित समाज से संबंधित कहानियाँ ६१
  डॉ आर.के.डी निलांती कुमारी राजपक्षा
- सत्यप्रकाश के कथा साहित्य में दलित चेतना ६२
  डॉ. शरद पारखे
- समकालीन हिंदी कहानियों में दलित चिंतन ६३
  डॉ. शक्तिराज
- हिन्दी कहानी साहित्य में चित्रित दलित क्रांति चेतना ६४
  डॉ. शट्टू दशरथ मधाळे

Head of the Dept.
ACS College, Shankarnagar
Tq. Biloli Dist. Nanded.

'मोरी की ईंट ' उपन्यास में दलितों का जीवन दर्शन

डॉ.पी.एम.भुमरे

साहित्य और मनुष्य के जीवन का अटूट संबंध है। मानव जीवन से ही समाज जीवन का विकास होता है। आज के साहित्य में भी वैश्वीक जीवन मूल्यों का समावेश होता जा रहा है। हिंदी साहित्य विकास के साथ ही साथ कई विशयों पर लिखा जा रहा है। हिंदी साहित्य की सभी विधाएँ अपने-अपने क्षेत्र में अग्रेसर है। गदय और पदय की अपेक्षा गदय में उपन्यास विधा का विकास प्रगति पर है। नए नए विशयों पर उपन्यास लिखे जा रहे है। विशेष कर कस्बा गाँव और शहर तक के समाज का जीवन दर्शन उपन्यास के माध्यम से सफलतापूर्वक हो रहा है। समाज से वंचित, उपेक्षित और पिडितों के दु:ख दर्द का वर्णन उपन्यासों में किया जा रहा है। साहित्यकार समाज का एक घटक होता है। लेखक जो कुछ देखता, झेलता है, उसी की अभिव्यक्ति साहित्य में करता है। सामाजिक व्यवस्था में दीन दलितों को न्याय दिलाने हेतू साहित्य में उपन्यास विधा की महत्त्वपूर्ण भूमिका है। 'मोरी की ईंट' इस उपन्यास के रचनाकार मदन दीक्षित है। इस उपन्यास का प्रकाशन १९९६ में हुआ। साहित्य केवल मनोरंजन या ऐय्याशी का माध्यम और साधन नहीं है। भोगा हुआ जो सच है, उसी की अभिव्यक्ति करनेवाला साहित्य कालजयी होता है। हिंदी साप्ताहिक 'नया सवेरा' के संपादक मदन दीक्षित अपने जीवन में आए अनुभव इस उपन्यास में व्यक्त करते है। सामाजिक व्यवस्था में उपेक्षित और दलितों को कोई स्थान नही था। सामजिक व्यवस्था ने इनको दबाया अपने अधिकारों से कुचला दिया गया था। इसी कारण दलितों अन्य पिछडों के सामाजिक और आर्थिक जीवन में कई प्रकार की समस्याएँ निर्माण हुई। इस अन्यायकारी सामाजिक व्यवस्था का शिकार उपेक्षित, दलित, पिछड़े बनते रहे। जिस प्रकार चक्की आटा पिसती है उसी प्रकार से सामाजिक व्यवस्था में शोषण का शिकार दलित पिछडे होते रहे।

Head of the Dept. ACS College Shankarnagar Tq. Biloli Dist. Nanded.

सा.प्राध्यापक

कला, वाणिज्य व विज्ञान महाविद्यालय,
शंकरनगर, नांदेड

"मोरी की ईंट उपन्यास में दलितों का जीवन दर्शन"

प्रा.डॉ.पी.एम.भुमरे
सा.प्राध्यापक
कला, वाणिज्य व विज्ञान महाविद्यालय,
शंकरनगर, नांदेड
मो. 7507436145

प्रस्तावना :–

साहित्य और मनुष्य के जीवन का अटूट संबंध है। मानव जीवन से ही समाज जीवन का विकास होता है। आज के साहित्य में भी वैश्वीक जीवन मूल्यों का समावेश होता जा रहा है। हिंदी साहित्य विकास के साथ ही साथ कई विषयों पर लिखा जा रहा है। हिंदी साहित्य की सभी विधाएँ अपने–अपने क्षेत्र में अग्रेसर है। गदय और पदय की अपेक्षा गदय में उपन्यास विधा का विकास प्रगति पर है। नए नए विषयों पर उपन्यास लिखे जा रहे है। विशेष कर कस्बा गाँव और शहर तक के समाज का जीवन दर्शन उपन्यास के माध्यम से सफलतापूर्वक हो रहा है। समाज से वंचित, उपेक्षित और पिडितों के दुःख दर्द का वर्णन उपन्यासों में किया जा रहा है। साहित्यकार समाज का एक घटक होता है। लेखक जो कुछ देखता, झेलता है, उसी की अभिव्यक्ति साहित्य में करता है। सामाजिक व्यवस्था में दीन दलितों को न्याय दिलाने हेतू साहित्य में उपन्यास विधा की महत्त्वपूर्ण भूमिका है। 'मोरी की ईंट' इस उपन्यास के रचनाकार मदन दीक्षित है। इस उपन्यास का प्रकाशन 1996 में हुआ। साहित्य केवल मनोरंजन या ऐय्याशी का माध्यम और साधन नहीं है। भोगा हुआ जो सच है, उसी की अभिव्यक्ति करनेवाला साहित्य कालजयी होता है। हिंदी साप्ताहिक 'नया सवेरा' के संपादक मदन दीक्षित अपने जीवन में आए अनुभव इस उपन्यास में व्यक्त करते है।

दलित साहित्य की अभिव्यक्ति के आयाम :–

समाज की निर्मिती कई हजार साल पहले हुई है। समाज में सामाजिक रचना का भी स्थान होता है। समाज की रचना में किसे, कौनसे अधिकार या स्थान है। इस पर सामाजिक विकास निर्भर करता है।

भारतीय समाज की व्यवस्था का आधार वर्णव्यवस्था एवं वर्ग व्यवस्था है। इस व्यवस्था में जन्म से ही अधिकार एवं सत्ता का संपादन होता है। वर्णव्यवस्था में हजारों सालों से दलित हरिजन और कई प्रकार की पिछडी जातियों को उनके मानवीय अधिकारों से वंचित रखा गया है। सामाजिक व्यवस्था में उपेक्षित और दलितों को कोई स्थान नही था। सामजिक व्यवस्था ने इनको दबाया अपने अधिकारों से कुचला दिया गयाा था। इसी कारण दलितों अन्य पिछडों के सामाजिक और आर्थिक जीवन में कई प्रकार की समस्याएँ निर्माण हुई। इस अन्यायकारी सामाजिक व्यवस्था का शिकार उपेक्षित, दलित, पिछड़े बनते रहे। जिस प्रकार चक्की आटा पिसती है उसी प्रकार से सामाजिक व्यवस्था में शोषण का शिकार दलित पिछडे होते रहे। उन्हें

Head of the Dept
ACS College, Shankarnagar

कई मानवीय अधिकारों से वंचित रखने से निरक्षरता, अज्ञान, अंधश्रद्धा, मानसिक गुलामी, दास्य छूआछूत, ढोंगी, पाखण्डी प्रवृत्ति बढ़ती चली गई। समाज की निर्मिती में इनका भी योगदान रहा है। परंतु इन्हें सामाजिक व्यवस्था में किसी भी प्रकार का स्थान नही दिया गया। जानवरों से भी बदतर दलितों एंव पिछड़ो के साथ मानवीय व्यवहार किया गया। कालांतर में अँग्रेज आए, कई विदेशी सत्ताओं ने भारत की बागडौर संभाली। इस विदेशी व्यवस्था में कुछ दलित एवं पिछडे शिक्षीत बने। आगे चलकर सामाजिक व्यवस्था में क्रांतीकारी बदलाव आए। महात्मा फुले, बाबासाहेब आंबेडकर, राजर्षी शाहू महाराज, सयाजीराव गायकवाड, ताराबाई शिंदे, शिवाजी महाराज जैसे समाज सुधारकोंने सामाजिक व्यवस्था में बदलाव की भूमिका के रूपमें कार्य किया है।

सन 1947 में भारत आजाद हुआ। भारतीय राज्यघटना के शिल्पकार डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर ने दलित वंचित और अन्य पिछड़ों के लिए अधिकार दिलाने हेतू महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। आज के युग में दलितों और अन्य पिछड़ों के जीवन में जो बदलाव आया है, वह केवल संविधान ने दिए अधिकारों से संभव हुआ है।

डॉ. एन.सिंह दलित शब्द का अर्थ बताते हुए कहते है कि, "जिसका दलन या उत्पीडन किया गया हो, शस्त्र या शास्त्र द्वारा हो"[1] अर्थात दलित वह है जो सामाजिक व्यवस्था में बहिष्कृत है, उसे मानव के अधिकारों से वंचित रखा गया है। डॉ.पुरूषोत्तम सत्यप्रेमी के शब्दों में "समता के अस्मितादर्शी प्रगतिशील समाज के मानवीय मूल्यों की स्थापना के लिए संघर्षशील लोग ही दलित है।"[2] हिंदी साहित्य और दलित सामाजिक व्यवस्था के अंतर्गत दलितों की स्थिति, उनकी पारिवारिक स्थिति, आर्थिक स्थिति अत्यन्त बिकट है। कई प्रकार की सामाजिक समस्याएँ है। साहित्यकार भी समाज में रहते है। साहित्यकार संवेदनशील होता है, और सामाजिक व्यवस्था में दलितों की स्थिति पर साहित्य रचनाएँ हुई है। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद हिंदी की कविता आत्मकथा, नाटक, निबंध के द्वारा दलितों के जीवन का दर्शन हुआ है। विशेषकर हिंदी के उपन्यासों में दलितों का जीवन दर्शन अधिक सशक्त हुआ है।

'मोरी की ईट' यह उपन्यास भी दलितों के जीवन का यथार्थ वर्णन करता है। इस उपन्यास के लेखक मदन दीक्षित ने जो सामाजिक पीड़ा, दुःख दर्द झेला है, सहन किया हैं, उसी की अभिव्यक्ति की है।

मोरी की ईट उपन्यास में दलितों के जीवन का दर्शन :–

मोरी की ईट यह उपन्यास 1996 में प्रकाशित हुआ। इस उपन्यास में लेखक द्वारा सामाजिक जीवन का आँखों देखा हाल प्रस्तुत किया गया हैं। वर्तमान कालीन सामाजिक दूर्दशा का दर्शन कराने का उद्देश लेखक का रहा है। इस उपन्यास का कथानक स्वातंत्र्योत्तर भारत में कई प्रकार की योजनाएँ सरकार द्वारा चलाई गई। इस योजनाओं से कितना विकास हुआ, शिक्षा और रोजगार के क्षेत्र में दलितों की भागीदारी कितनी रही है। इन सभी प्रश्नों के

उत्तर हेतू यह उपन्यास लिखा गया है। यह उपन्यास समाज में व्याप्त सच को सच और झूठ को झूठ कहने में प्रामाणिक एवं यथार्थवादी लगता है। स्वतंत्रता से ही कई समूहों द्वारा धर्म बदलाव के प्रयास हो रहे है। इसाई समाज और मेहतर समाज का यथार्थ जीवन का दर्शन करानेवाले उपन्यास में 'मोरी की ईंट' महत्त्वपूर्ण है। धर्म बदलाव करने के लिए व्यक्ति क्यो मजबूर हो जाता है। धर्म बदलाव करने पर मनुष्य के प्रश्नों का समाधान हो जाता है, जैसे ज्वलंत प्रश्नों की चर्चा उपन्यास में हुई है।

इस उपन्यास का नायिका मंगिया है जो सतत संघर्षमय जीवन जीती है। उत्तराचल के जन जातिय मेहतर समाज की स्वतंत्र स्त्री की कथा अभिव्यक्त हुई है। निम्न जातियों में शिक्षा के प्रचार–प्रसार का कार्य भी मंगिया द्वारा होता है। उसे अनेक कठिनाईयों में कार्य करना पडता है। सामाजिक व्यवस्था अछूतों की समस्या स्पर्श–अस्पर्श जैसी कुप्रथा के खिलाफ एक स्त्री आवाज उठाती है। इस उपन्यास में ग्यारह खण्ड है। इसमें दो समाज की एक – दूसरे के साथ तुलना की गई है। जिसमें एक निम्न वर्ग की जाति मेहतरों में मंगिया केंद्र में है। उसके जीवन में कई प्रकार कठिन और संघर्षमय प्रसंग आते है। सुख, दुःख के पलों में भी वह अपना दर्द किसी के पास अभिव्यक्त नही कर सकती। इसमें भिन्न–भिन्न वेदनाओं की अभिव्यक्ति कथाओं में प्रतिपादित हुई है। दूसरी कथा नंदलाल पंत और मोहनचंद्र जोशी के बारे में आयी है। यह दोनों भी धर्म परिवर्तन करते है। धर्म बदलाव से ये दोनों कई योजनाओं का फायदा उठाते है। दूसरी ओर मेहतर भंगी लोग अपना धर्म न बदलकर भी संघर्ष करते है। कालांतर में प्लोरा पंत और जोशी परिवार की जेकब मेहतर परिवार से संबंध रखती है। प्लोरा और जेकब विभिन्न जाति के होकर भी पारिवारिक रिश्ते स्थापित करते है। उपन्यास के प्रारम्भ में मेहतर समाज परिवार की इदगदिया और मंगिया की कथा को प्रस्तुत किया है। इरगदिया शराब का सेवन करता है। आलसी और कामचोर है। घर की पारिवारिक जिम्मेदारीयों का पालन नही करता। इस कारण मंगिया को कई प्रकार के पारिवारिक कष्ट झेलने पडते है। उपन्यास में जमादार हीरालाल बेईमान और लालची मनुष्य है। हीरालाल ने अवैध तरीके से गरीबों को प्रलोभन के लालच में फँसाकर सुंदर औरत को फँसाया है। हीरालाल की नजर मंगिया पर पड जाती है। हीरालाल मंगिया को अपने जाल में फँसाने के लिए कई प्रकार के प्रलोभन दिखाता है। फिर भी मंगिया हिरालाल के षडयंत्र से भली–भाँति जानती है। छुटिया जमादार के घर पर काम करती थी, वह अचानक बीमार पड जाती है। घर के कामकाज के लिए मंगिया जाने पर भी हिरालाल के चंगुल में नही फँस जाती। फिर भी हिरालाल द्वारा मंगिया के पति को खुश कर दिया जाता है। हिरालाल ने मंगिया के बारे में झरगदिया के कान भरा दिए।

घर आने पर झरगदिया ने मंगिया को पीटा और कई प्रकार के चरित्र पर दूषण लगाए। झरगदिया का व्यवहार मंगिया का शोषण करता हुआ सा दिखाई दिया है। मंगिया अपना भविष्य स्वयं बनाती है। संघर्ष करती है। यही आदर्श नारी का उदाहरण है।

Head of Hin Dept.

इस उपन्यास में गाँव की राजनीति, आर्थिक एंव सामाजिक स्थिति का वर्णन हुआ है। इसमें वंचित, शोषित, अशिक्षित जातियों का चित्रण भी हुआ है। मेहतर जनजीवन के दर्शन का वर्णन करनेवाला यह उपन्यास है। जीवन के विविध आयाम निम्नता से अभिव्यक्त हुए है।

1) रूढ़ि–प्रथाओं एंव परम्पराओं का प्रचलन :–

प्राचीन काल से लेकर आज तक समाज में कई रूढि एंव परम्पराओं का वर्चस्व रहा है। रूढ़ि एवं परम्पराएँ समाज के विकास में सहाय्यक होनी चाहीए। व्यक्ति विकास के लिए रूढ़ियों का होना आवश्यक होता है। परंतु व्यक्ति के विकास में बाधा डालनेवाली कुप्रथाओं का विरोध भी आवश्यक है। इस उपन्यास की कथावस्तु मेहतर समाज की है। इस उपन्यास के माध्यम से समाज में व्याप्त प्रथाओं का उल्लेख हुआ है। जैसे रखैल प्रथा, जूठ़न खिलाना, करसव प्रथा आदि। इस उपन्यास में सरकारी हेल्थ अधिकारी की कोठी पर मंगिया को भेजा जाता है। नारायण पांडे और मंगिया के अवैध संबंध से सोहन का जन्म होता है। रखैल रखने की प्रथा भी इस समाज में प्रचलित है। झरगदिया मंगिया का पति होता है। परतु उनके बीच तनाव उत्पन्न हो जाता है। "शंभू ठाकूर को मेहतर बिरादरीमें शामिल होने हेतू मेहतरों का जूठन खिलाया जाता है।"[3] किसी स्त्री का पुनः विवाह किया जाता है तो उसे कराहु कहाँ जाता है, यह भी प्रथा प्रचलित है। इस प्रकार की जन–जातियों में कई प्रकार की प्रथा एवं परम्पराओं का प्रचलन है।

2) त्योहार–उत्सव एवं पर्वो का आयोजन :–

भारतीय समाज में पर्वो और त्योहारो का संबंध ऋतूओं से है। हिंदू संस्कृति में हर दिन में कुछ ना कुछ खास होता है। त्योहारों एवं पर्व के प्रसंग पर पूजा करना, श्रद्वाभाव से उपासना करना प्रचलित है। देहाती और ग्रामिण समाज में बेटे के जन्म पर विशेष दिन का आयोजन होता है। इस उपन्यास में भी जन्म के प्रसंग पर और विवाह, मृत्यू आदि के प्रसंग पर भी कुछ प्रथाओं का उल्लेख किया है। प्राचीन काल से ही बेटी जन्म के प्रति सामाजिक उदासिनता का वर्णन हुआ है। बेटे का जन्म शुभ और बेटियों का जन्म अशुभ का प्रतीक माना जाता रहा है। बेटीयों के प्रति भेदभाव किया जाता है। बेटे के जन्म प्रसंग पर मिठाई बाँटना, लोकगीतों का आयोजन करना आदि शुभ माना जाता है। शादी के प्रसंग पर बकरे की कुर्बानी दी जाती है। 'मोरी की ईंट' इस उपन्यास में ऐसी कई प्रथाओं का प्रचलन है। जो परम्परा से चली आ रही है।

3) विवाह संस्कार :–

व्यक्ति पर नौ संस्कार किए जाते है, ऐसा हिंदू धर्म में कहा गया है। जन्म संस्कार के साथ ही साथ विवाह संस्कार भी महत्त्वपूर्ण माना जाता है। इस उपन्यास के मेहतर समाज मे कई ऐसी अनोखी संस्कारों वाली परम्परा है। इस उपन्यास का पात्र ठाकुर शंभूसिंह मेहतरानी परबतिया के साथ विवाह करता है। परंतु बिरादारी प्रथा के अनुसार अपने बिरादारी

का करने के लिए उसे जूठा खाना खिलाना पडता है। इस उपन्यास में गुल्लू प्रधान की ओर से बिरादारी को रोटी खिलाकर परबतिया के साथ शंभू की शादी कर दी जाती है। ऐसी कई प्रकार की विवाह के समय की जानेवाली अच्छी, कुछ बुरी प्रथाएँ प्रचलित है। जैसे– "शंभू को पलंग के नीचे बिठाना, कफन के कपडे पहनाना, बिरादारी को भोजन देना, जूठन खाना आदि होने पर ही विवाह संस्कार हो जाता है।" रम्पिया का पूर्नविवाह होता है। इस प्रकार के विवाह की एक प्रथा है।

4) आर्थिक परिस्थिति :–

सामाजिक एवं पारिवारिक विकास के लिए आर्थिक आधार की भूमिका महत्त्वपूर्ण होती है। मदन दीक्षित ने इस उपन्यास के माध्यम से मेहतर जन–जातियों का जीवन दर्शन अभिव्यक्त किया है। मेहतर जातियों के लोगों ने नौकरी के साथ–साथ अपने परम्परागत व्यवसाय को भी बनाए रखा है। प्रमुख रूप से झाडू–पल्लो का काम और पारिश्रमिक मजदूरी करना जैसे कार्य भी वह कर रहे है। इस उपन्यास का नायक झरगदिया चुंगी का कार्य करता है। मंगिया को भी अस्पताल में साफ–सफाई का काम करना पडता है। ऐसी परिस्थिति में भी उनके बेटे की पढ़ाई हो जाती है, और उनका बेटा सोहन डॉक्टर बन जाता है। आज भारत सरकार और राज्य सरकारों की कई योजनाओं के माध्यम से मेहतर जन–जातियों का भी शैक्षणिक एवं सामाजिक विकास हो रहा है। कम–अधिक प्रमाण में मेहतरों के जीवन में भी बदलाव आ रहा है। उनके जिविकोपार्जन के साधनों में भी नए संसाधनों का उपयोग हो रहा है। इस प्रकार इस उपन्यास में मेहतर जन–जातियों की स्थिति में दिन ब दिन प्रगति हो रही है।

5) जातिगत भेदभाव प्रथा :–

भारतीय समाज वर्णव्यवस्था एवं वर्गव्यवस्था पर आधारित है। सामाजिक व्यवस्था में गुणवत्ता का आधार गुण न होकर जाति एवं वर्ण की है। 'मोरी की ईंट' इस उपन्यास में भी जातीय भेदभाव का वर्णन हुआ है। मेहतर समाज की व्यवस्था एवं कथा का आयाम जातिगत है। मेहतर जाति की मंगिया को जब डॉ. सुरेंद्र पांडे की कोठी पर नियुक्त किया जाता है तो डॉक्टरनी साहिबा के ओर से मंगिया की स्तुति की जाती है। तब मंगिया प्रतिक्रिया के रूपमें कह देती है की, "एक निम्न जाति की मंगिया को इतना सम्मान देगी तो लोग क्या कहेंगे।? इससे यही आशय स्पष्ट होता है कि मंगिया जैसी निम्न जाति की कितना भी आदर्श ऊँचा काम करे तो भी, उसे उतना सम्मान नही मिलता। समाज में धर्म के साथ ही साथ जातीय भेदभाव भी है। इसे दर्शानेवाला प्रसंग निम्नवत है डॉ. पांडे सोहन की शिक्षा के बारे में कहते है कि, "यहाँ तो कोई सोहन को किसी स्कूल के क्लास में घुसने नही देगा अतः उसे ईसापुर के मिशन स्कूल में दाखिला मिल सकता है।" इससे यह स्पष्ट होता है कि, शिक्षा

Head of the Dept.

संस्थानों में जातीय भेदभाव है। इस उपन्यास का दलित जैकब बुद्धिमान है, वह अच्छी से पढ़ाई करता है परंतु दिलीपसिंह उसका अपमान करता है।

सारांश :–

इस प्रकार 'मोरी की ईंट' उपन्यास में दलितों का जीवन दर्शन विविध आयाम लेकर अभिव्यक्त हुआ है। मनुष्य के जीवन का प्रतिबिम्ब इस उपन्यास में हुआ है। इस उपन्यास में दलित जीवन का चित्रण करते समय लेखक ने पर्व, उत्सव, रूढि परम्परा, जाति पंचायत, जातीय भेदभाव, राजनितिक परिस्थिति आदि का सांगोपांग वर्णन किया है। सभी समस्याओं की जडे अशिक्षा और अज्ञान है। इसी कारण उपन्यास की नायिका मंगिया और उनका पति झारगदिया लोगों के छल का कारण बन जाते है। मंगिया मेहतर समाज की प्रतिनिधि है। मंगिया अपने जीवन में आए कठीन प्रसंगो में भी डटकर संघर्ष करती है। अतः प्रस्तुत उपन्यास में अछूत जातियों के लिए भी अछूत, मेहतरों के जीवन की आंतरिक जीवन का दर्शन सशक्त रूप में अभिव्यक्त हुआ है।

संदर्भ :–

1) मूक मेरी कविताएँ – डॉ. एन.सिंह पृष्ठ–21.
2) दलित साहित्य चिंतन के विविध आयाम – डॉ. एन.सिंह पृष्ठ–20.
3) मोरी की ईंट – मदन दीक्षित पृष्ठ–42.
4) इतिहास लेखन के विविध आयाम – लेखक डॉ.मनोजकुमार
5) 21वी शती का हिंदी साहित्य – नवविमर्श लेखक – डॉ.एस. वाय. होंगेकर
6) 21वी सदी का हिंदी उपन्यास साहित्य – विशाला शर्मा 2019.

संदर्भ ग्रंथ आलोच्य उपन्यास :–

मोरी की ईंट – मदन दीक्षित– शब्दकार प्रकाशन, दिल्ली–1996.

Head of the Dept.
ACS College, Shankarnagar
Tq. Biloli Dist. Nanded.